

वैद्यनं ज्ञेयं कुरु ॥ १ ॥ श्रीवक्तुसवगमनं पूजयन्मायुः पूज्यतमं पूर्वपूज्य
वलिकाखर्यं आगच्छावतनं ॥ २ ॥ नौदखित्वा नावसिंहं नृपतेन दाम्ना
दतनं यथायुधं नमस्कां वायुव्यापितवाशसः ॥ ३ ॥ गदधनुर्कावल
गसाजिष्मननादिसिंयाताप्रयुगदातक आकास्यपूज्यसुदसनी ॥ ४ ॥ सति
धसवगमनेषु पविस्त्राविष्णुयं जत्रविष्णुयं जत्रविनाहं विष्णुनाममहि नत्र ॥ ५
॥ नात्र द्वात्रयं यथा प्रसंगमसा नु निवृत्तं नदिखेन वनं शुद्धं वायव्यं
रुयं न तथा ॥ ६ ॥ नृपिदेगिनिपातेषु रूतगुरुविनासनी सा नि निव

[illegible][illegible]

का न स पुन व पु ना ना ॥ ३१ ॥ य म हा द न व र्ति रु ग निया ना था अ
या म न स अ च न न के ला था ॥ ३२ ॥ थ न आ द ग द य का द व कं थ वि
म ना रु यं रु यं रु नि थ का द ना क गु निया ना ॥ ३३ ॥ ध न रु न रु उ रु
स क ले अ सा न ल वि द या रु क या क थ क थ य सा न ॥ ३४ ॥ दि
न के स द दा स रु नि गू नं रि ना ग्मा नि गू ना क स न हा स या म न व ना
॥ ३५ ॥ ॥ २ ॥ न मा रु ग द न वा शु द ता य ॥ व द्वा उ वा रे ॥ वि
वु यं रु न के दि वी स व दू रु नि वा न न उ ठा न अ म हा वि उ स व स नू नि

का न न ॥ १ ॥ शि पू न द रु मा न मु व द्वा ना रु सा न रु नं न द रु स य व र वा
मि अ न्मा न द्वा ण दा रु वे रु ॥ २ ॥ या न द रु ने ल वि द रु यं रु नि वि क म
उ ला के स व न स र्व क वा र्थ व रु ना द न ॥ ३ ॥ ता रु य रु अ न न द रु मु
म रु वा न न था उ द न य म ना रु शू रु नि यि ना च न रु नि ॥ ४ ॥ व म या सा न
वि रु द रि व ल म वू स द न वा रु सा वा स द न शू रु द य च रु ना द न ॥ ५ ॥
नू न क रु वा ना रु रु वू च म र्व म द न मा व द कं रु या ल ख रु रि क स सा
॥ ६ ॥ न गु ना य ना न रु न ला न ग नू द रु क पा न के स व न रु

विविधप्रकृत्यानां मंदयदयकना, यउदिगसंयक्र, विविधयाकां वन
 ननक्रियकना, यविनुया नुभ्रासस्य धानदिनं ठला॥ ८॥ शुभ्रुनद्रा
 यम, धंक्रवा रुचनाननदियताययाकां ननक्रा पन॥ ९॥ नक्रवाका
 वा क्रैति, यूजायाकां नला, धनदान नूनदान वस्तु दातविना॥ १०॥
 वनु वदननासा सुधा नपा वरुना विनक्रउ आश्वेनतिना दृढि विना
 ॥ ११॥ धव नस वन मालि तनि च्छु नयाय न नूनहन सुदन नय वात
 ना॥ १२॥ वनिया दूजा नय दाका वयतु रुक नुना काकि नया सच न
 वंदयाय यना॥ १३॥ मधूनया सचनया दाका कावि अया दनया

यथा...

354

यदूका सर्वे उदकया ना॥ १४॥ चिखानखाका वधनिता सयक्रना
 यव नून नून न्यदू उदक रुग्म मंदय॥ १५॥ रुचमूनियदा नथस।
 नानावा सनु दद्रगाया गमयागु विद्धि नाद्रुन वियका दा॥ १६॥ नि
 वदा क्रानि उमवना मयया स्वयन गगा रु मिवित्र सा नुर्याये॥ १७॥
 युवा स्य नना आहाना गत्य मूरव रुना द्विचुनयाय नरु निकय ननव
 या॥ १८॥ धनं धनं रुग्म अयथानि के रुना रुगनया नाथ स्वामि क
 के रुव ननदला॥ १९॥ नया चो न्य अय द्विदं रुदा सदा दमनं शुभ्र

लि कि लिं द्वा च का द्वा ऊ ना न ॥ २० ॥ सू क सू म ये या दा द क ।
मं द न य द्वा ना सं क य या यू न ऊ न वा ध य या दा द वा ना ॥ २१ ॥ क स
न क स का स क मं द न चान क ना सू क न या मि र क य ना दा द दि वा न
व द ना ॥ २२ ॥ सू क नां का न या दा द वि या द श व द ना सं क य या दा
द वि या न वि य ना ना ॥ २३ ॥ क स नि न स दि न न ह मि दान वि
न य दा वा श य न या द ह स न का ना ॥ २४ ॥ थ द च य ध न ल या
द ना श न क ना स रु या ना क स ध द ग्रा दा ग्रा दा द वा ना ॥ २

५ ॥ शु ध म ये या ना न स ध य ना ग द ना वा य ना ग न य थ स ग ना
द स द ना ॥ २५ ॥ क ना दो न वि य ध ना क न स न रु ना ग ना द न
ना दा ना अ थ नि तु ति ना दा ॥ २६ ॥ क स न म रु न स्वा मि धि म नि वा
क का अ य या ध रु मि या वा न अ सि न स न का ॥ २७ ॥ य दू का सि
स न स ना अ क क दू ना ल ल का न या दा य अ श वा श वा स सा ना ॥ २
२ ॥ वि दा न वि दा न्द्र वि वि मि द ना ना अ स म दि न ना द द वि
इ ना य ना ॥ ३० ॥ यि थि मि स ना अ इ स वा न अ ग ना क वि यो न्द्र

नाहं गुह्यमाह्वयतथागतं ॥ २ ॥ मातापिताहं विचरं यद्वदना सुहृत्त
वैकुण्ठं दत्तात्रेयमाह्वयतथागतं ॥ ३ ॥ कुमयापि कुम्भस्या
न सुखेन कमद्वृत्तं त्रिकाकिं न पस्यामि गुह्यमाह्वयतथागतं ॥ ४ ॥ अ
नन्तये महाध्याय अनागरुसागत्र अन्वत्तु न रुय नाथं गुह्यमाह्वयतथा
गतं ॥ ५ ॥ अन्तुनाका समाचारं महासागत्र लंघनं दूत्रय सामया नृत्वा
गुह्यमाह्वयतथागतं ॥ ६ ॥ यस्मा यमन विह्वले गम्यागम्या न वदितुं गु
ह्यमाह्वयतथागतं ॥ ७ ॥ मा नृयानं युतियातं यं यनं न कुम्भं तं यस्यामिति

मित्रं ध्याय गुह्यमाह्वयतथागतं ॥ ८ ॥ दत्तं मया दत्तं यत्तु दत्तं सद्यका कुवि
नासि तं दत्तं मया सत्वाह्वयतथागतं ॥ ९ ॥ कुं दत्तं
के सुखेनापि यत्र लोके न कुर्वितं वैरि न के म सुक नं गुह्यमाह्वयतथा
गतं ॥ १० ॥ कासिपूस्पत्रुथं कासु रुमन न वायुनो दं कुं दिसं अ
विहलं क गुह्यमाह्वयतथागतं ॥ ११ ॥ अन्त विवस्व शुक्ल वदू विज्ञानि नासा
यां यं यथा न तयस्यामि गुह्यमाह्वयतथागतं ॥ १२ ॥ अन्ताये दं क न हं गुका
न दं वदू मया रुना अहं नु तथामन्य गुह्यमाह्वयतथागतं ॥ १३ ॥ न न के रवू

श्री राम नमो वरुण चिन्ता नलवीद न स न न कू बग क्कामि कामगुण रुदिर स्व
 मि ॥ १५ ॥ वेद्या वेद्या न के सु सव व्याधिवि कि सुकै लोक नार्थ रुय गुण
 लोक सव ना चरी ॥ १६ ॥ वुंति नरका धन नानु समाफ ॥ ॥ ॥
 रुके तमी ॥ सल सुनि नम रु स वद नै काम नूयिनि वि द्या न रु के नूकामि
 सिद्धि रु व रु मे सदा ॥ असि न के सु म रु सा यूद नि क का विस्का धन
 वल सन व सा मा नी नि वद के सा ग स ध न क ल न रु सु रु ता न क के
 रु ग न जि ग न स म सा हा न नि व न म सा च रु मुख रु रु ॥ व द
 रु व द रु मा म मा न स्य न व न दि द्य स व स रु स न रु नि स न सु नि

॥ गानायाद्वायवानेन गानावद्वायमासनाप्रकृतं तद्वनं गाना ॥ ॥
न गानावकस्य मनीने जायकनाक्रयस्य क्रान्तस्य माव्याग
नस्य वीहू रशिवाव न दान ॥ १ ॥ याथ कूदावी कया वायनादाता
स न दूनी श्रुथस्य तया ॥ २ ॥ यथा यथा ददाख नूनीने श्रुतानां कि
ना गायामाना न कीखाया ॥ ३ ॥ श्रुतानमीखा यने तादा
कनस्य स्य नासाकवी तनती दाता नीव रुयमा नाक्षानया

दाव. श्रुते सनी याशि वातया ॥ १ ॥ ॥ ॥ ता वृत्त रूपस्य
श्रुतीने तद्वता स्रुथ थी सदा शिवया ॥ २ ॥ ली कमा
श्रुत थयया स्रुप ता वा नवी वन ना स्रुया दातीया ॥ ३ ॥
॥ ॥ न मा शिवयन मा वाया यथाय ॥

आयन विखालमखानि दावूदक्ष ततायायुह ॥६॥
कनया विदुषी नीलकामया वधन वसंतया की की
नथला लाक्षि विदायुह ॥७॥ वसा की स्यन लकस
थुकाक्षी तना मरु टया विदमान था दा दीय श्राप
ह ॥८॥ वलया स्य तना युह रुलया कन स वृक्ष पन
सन वाक्षी ती नी प्ररुव ही गेयुह ॥९॥ रुलस वी देव

ति गम रुयद रमति वन था प्रद भ्रति दस मस्य की
रती वी स्रन्याय भ्रति साल दाय सल स्र ति त्रिमन
हाक्षी रति रुत्रसकाटि वी नती देवी भ्रासल स्र
ति वी स्रन्या भ्रास ति गदी ॥ १० ॥ ती भ्रासा न दाय त
तस माय ॥ ॥ ११ ॥ न मा भ्रासा कर्ना था य ॥ का म्नी वृ
वत वी त स्रवल न ॥ रुद कि न प्रसूता ग म नू यो ॥

दुद्रुमिंदलसागलनंदी॥बीबीनानायनद'बनम
सु॥१॥यामलककुवसागजकुनंदीकपीतसजाय
समान्यसुदसुद॥विबी॥२॥रससागलसुम
इनंदीजाकवामजतिनायुवक॥श्रीमयकुलामय
मूर्ति॥विबी॥३॥सगवनसुकाजनामयकुरतनागव
माहीसकसंवासकायकनागसमहिद॥विबी॥४॥

नतनागसुदशसुनाग(गदनागयककुतसुना
ग॥ॐतसनागनवाम॥विबी॥५॥सवननदीकवा
यदुदसे॥विबी॥६॥ॐतिशिशुगमावाजाकतं॥७॥
समनतनागजासाकारसंकाफ॥८॥